किताब का नाम– एक लड़की, एक लड़का और एक पतंग

लेखक– मारजन केशावरजी आज़ाद

कला– एलहम काज़ीम

अनुवाद– टुलटुल विश्वास

यह एक बेहतरीन भावनात्मक कहानी है। इसके चित्र भी बहुत अच्छे व रंगीन हैं। पूरी कहानी आत्मविश्वास, उत्साहवर्धन और चाहतों पर टिकी है। सपने देखने और उन्हें पूरा करने में कोई अक्षमता आड़े नहीं आती, कहानी इस बात को बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत करती है। भाषा बहुत ही सहज और सरल है। बहुत दिनों से चली आ रही एक ही ढर्रे की कहानियों से अलग हटकर है।

कहानी की शुरुआत बहुत अच्छी है। कहानी ऐसी है कि बच्चों के अंदर उत्साह और उत्सुकता बढ़ती है। बच्चों की कल्पनाशीलता भी बढ़ती है कि वे उड़ रहे हैं। उड़ने के लिए पंखों की ज़रूरत नहीं है और आपकी भौतिक कमियाँ आपकी उड़ान को नहीं रोक सकती हैं, बहुत ही सुंदर ढंग से कहानी इस बात की वकालत करती है।

कहानी बहुत दिलचस्प है, कुछ पक्तियाँ बहुत अच्छी हैं। ऐसा लग रहा है कि जब पतंग बादलों के बीच में से होकर गुज़री तो बादलों के रंग बदल गए। बच्चों को सोचने का मौका दिया जा सकता है। *मछलियों ने हँसकर कहा, ''तुम करीब आ गई हो घास के मैदानों के पार चली जाओ।'' चिड़िया ने कहा, ''तम करीब आ गई हो, वो रहा उसका घर। दिखा?''* बीच–बीच में रुक–रुककर बच्चों के साथ चर्चा की जा सकती है क्योंकि कहानी हर एक बात के बाद थोड़ा ठहरती है और बच्चों को सोचने का मौका देती है। इसी के साथ कहानी बच्चों के दिमाग़ में चित्र भी उकेरती चलती है।

लड़की ने अपनी बैसखियों को बगल में रखा और पतंग के साथ उड़ चली – उसने अपनी बैसाखियों को रख दिया मतलब सारी तक़लीफ़ें एक तरफ़ छोड़ दी हैं और पतंग के साथ उड़ चली है। कई एक पंक्तियाँ ऐसी हैं जिन पर बच्चों के साथ चर्चा की जा सकती है। आख़िरी लाइन बहुत खूबसूरत है, *''सब उड़ चले हैं, सब अपने सपनों को जी रहे हैं, माँ बैसाखियों को साफ़ करते हुए आसमान को निहार रही है, उसकी बेटी सचमुच उड़ रही है और माँ उसको देख रही है।''*

चित्र भी बहुत अच्छे हैं लेकिन फॉन्ट उभरते हुए और बड़े होने चाहिए थे।

पुस्तक समीक्षक– नसीम अख़्तर